IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.53
Volume 4, Issue 4, March 2024

उच्च शिक्षा के क्षेत्र में भाषा को बढ़ावा

डॉ. ज्योति जोशी
एसिस्टेन्ट प्रोफेसर, संस्कृत विभागाध्यक्ष
एस. एस. जैन सुबोध गर्ल्स पी. जी. कॉलेज सांगानेर

भारत संस्कृति का एक खजाना है और कला, साहित्य, रीति–रिवाजों, परम्पराओं, भाषाई अभिव्यक्तियों, कलाकृतियों, विरासत स्थलों और अन्य कार्यों के रूप में प्रकट होता है। सृष्टि के निर्माण काल से ही भाषा कासंबंध मानव समाज से रहा है। मानव जीवन में भाषा एक अभिन्न अंग है जिसके बिना मानव गूंगा है। संस्कृत एक प्राचीन भाषा है। इसमें ज्ञान का असीम भण्डार है। संस्कृत में हमारी सांस्कृतिक विरासत समाहित है। नैतिक व राष्ट्रीय मूल्य संस्कृत में विद्यमान है। छात्रों में मूल्य एवं सांस्कृतिक शिक्षा के लिये संस्कृत ज्ञान आवश्यक है। हिन्दी भाषा का साहित्य अत्यंत समृद्ध है और यदि हम एक भाषा के माध्यम से साहित्य के क्षेत्र में इतने आगे बढ़ सकते हैं तो ज्ञान विज्ञान के क्षेत्र में भी सफलता प्रापत कर सकते हैं।

भौतिक, रसायन, खगोलिक विज्ञान, चिकित्सा शास्त्र सभी विषयों पर संस्कृत, हिन्दी आदि भाषाओं में लिखा जा सकता है। अन्तर्राष्ट्रीय जगत में कोई भी भाषा हो उसकी सरलता पर ध्यान दिया जानाचाहिये, क्योंकि आज की युवा पीढत्री सरल भाषा और ज्ञान–विज्ञान के मौलिक ग्रन्थों की मांग करती है। भाषा के विकास के लिये अनिवार्य हैं। प्रारम्भिक पढ़ाई मातृभाषा में हो। शिक्षा ही मानव को मानव बनाती है। अन्यथा वह साक्षात् पशु है जो केवल काम करना या पेट भरना जानता है। शिक्षा द्वारा ही मनुष्य विभिन्न क्षेत्रों में प्रतिभा का विकास करता है। भारतीय संस्कृति एवं मूल तत्वों पर भाषा आधारित होनी चाहिये।

मानव जीवन का चरम लक्ष्य आत्मनुभूति है। ईश्वर के प्रति आस्था उत्पन्न करना शिक्षा का एक लक्ष्य होना चाहिये। इस कार्य में देववाणी अधिक सक्षम हो सकती है। राष्ट्रीय भावना के विषय में भारतीय साहित्य में अनेकशः वर्णन विद्यमान है। उच्च शिक्षा में इनका उपयोग होना चाहिये। जिन भाषाओं का प्रयोग जनता करती है, वही जीवित रहती है। जब उच्च शिक्षा का माध्यम भारतीय भाषाएं बनेगी, तभी व्यक्ति अपने ज्ञान और विचार की समृद्ध परम्परा से परिचित हो पाएगा।

मुख्य बिन्दु :– संस्कृति, रीति–रिवाज, कलाकृति, अभिव्यक्ति, ज्ञान–विज्ञान, आत्मनुभूति, राष्ट्रीय भावना आदि।

संदर्भ ग्रन्थ सूची:

1. भारत की नींव–2, 2020
2. भाषा विज्ञान– भोलानाथ तिवारी, पृ. 3–4
3. साहित्य का इतिहास–परमानन्द गुप्त।
4. संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास, डॉ. कपिल द्विवेदी।
5. मेरे सपनों का भारत, पृ. 96
6. राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020 पृ.8
7. संस्कृत पत्रकारिता का इतिहास– डॉ. रामगोपाल मिश्र
8. संस्कृत साहित्य का इतिहास–डॉ. ए.बी. कीथ।

Copyright to IJARSCT
www.ijarsct.co.in